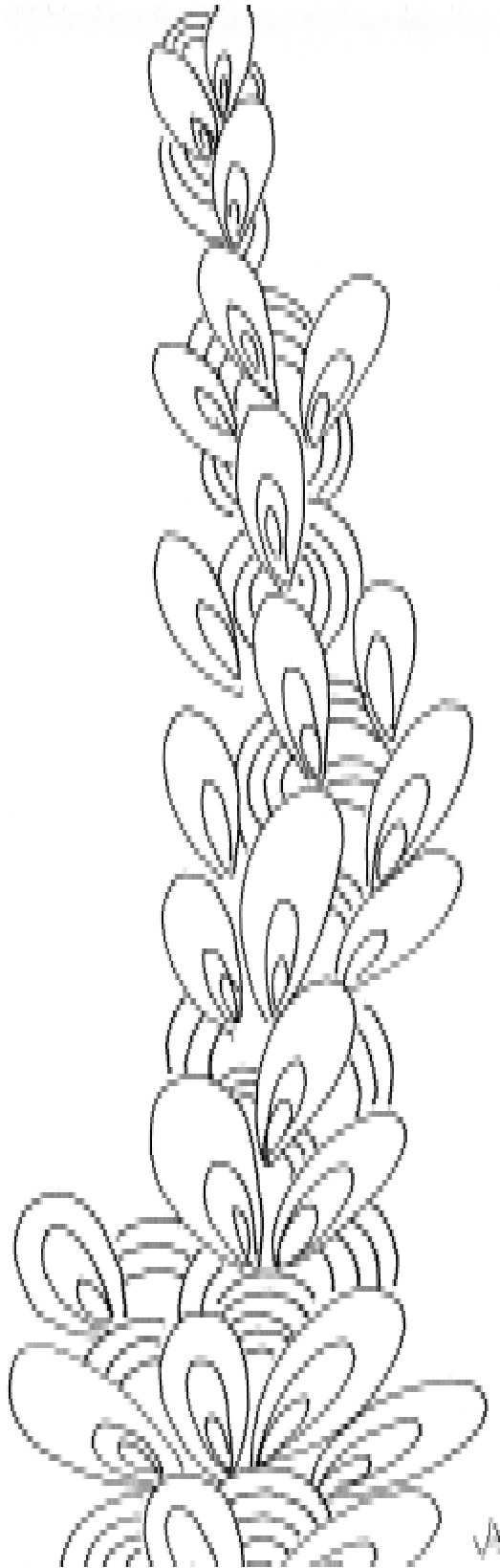




भारतीय ज्ञानपीठ
संस्थापक
श्रीमती रमा जैन
श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन

सम्पादक
रवीन्द्र कालिया

नया
ज्ञानोदय

भारतीय ज्ञानपीठ की मासिक साहित्यिक पत्रिका
अंक 76, जून 2009

नया ज्ञानोदय

अंक 76, जून 2009

प्रबन्ध सम्पादक

साहू अखिलेश जैन

प्रबन्ध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, पोस्ट बॉक्स नं. 3113

नई दिल्ली-110 003

फोन : 2462 6467, 2465 4196, 2469 8417, 2465 6201

फैक्स : 011-2465 4197; ई-मेल : jnanpith@satyam.net.in

वेबसाइट : www.jnanpith.net

मूल्य :

एक अंक 25 रुपये

व्यक्तियों के लिए :

वार्षिक : 250 रुपये / त्रैवार्षिक : 675 रुपये /

पंचवार्षिक : 1000 रुपये / आजीवन : 5000 रुपये

संस्थाओं के लिए :

वार्षिक : 300 रुपये / त्रैवार्षिक : 875 रुपये /

पंचवार्षिक : 1375 रुपये / आजीवन : 5000 रुपये

विदेशों के लिए :

हवाई डाक : एक अंक 5 डॉलर / वार्षिक 50 डॉलर

जल मार्ग : एक अंक 3 डॉलर / वार्षिक 25 डॉलर

शुल्क 'नया ज्ञानोदय, भारतीय ज्ञानपीठ' के नाम से उपर्युक्त पते पर भेजें :

(केवल मनीआर्डर / चेक / बैंक ड्राफ्ट से)

(दिल्ली से बाहर के चेक में 35 रुपये अधिक जोड़ें)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की

अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से

भारतीय ज्ञानपीठ का सहमत होना आवश्यक नहीं।

समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचारणीय।

Nay" a Gy"anodaya

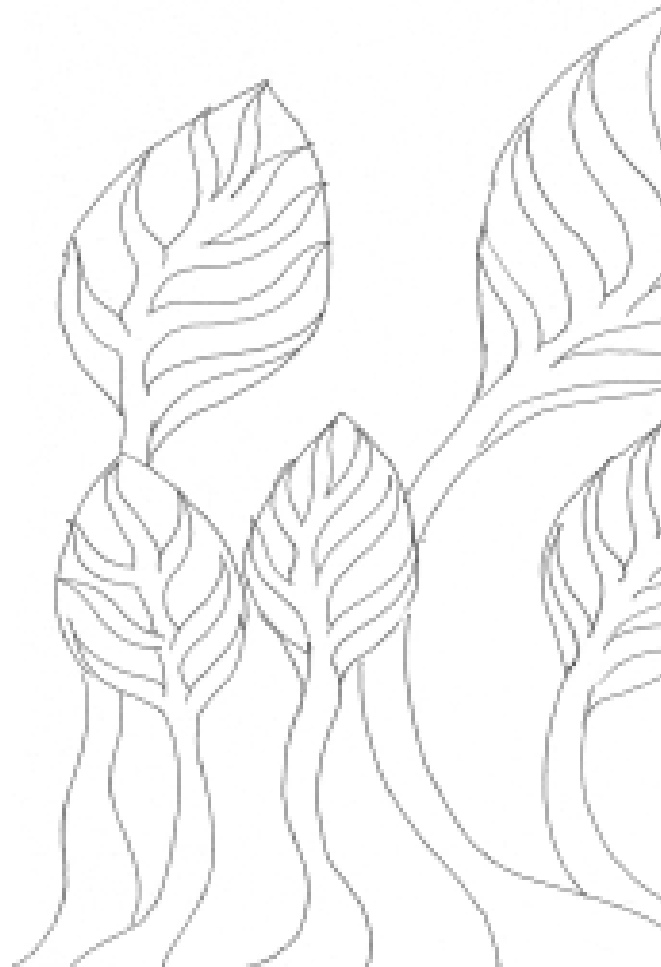
A Literary Monthly Magazine

Editor : Ravindra Kalia

Language : Hindi

Published by Bharatiya Jnanpith

18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003



तरतीब

स्मरण : चन्द्रकिरण सौनरेक्सा

- 8 भारत भारद्वाज : उड़ गयी पिंजरे की मैना

गज़लें

- 10 निदा फ़ाज़ली : तीन ग़ज़लें
10 एहतेराम इस्लाम : तीन ग़ज़लें
11 विज्ञान व्रत : चार ग़ज़लें

परीकथा

- 12 धर्मवीर भारती : एक छोटी मछली की कहानी

कहानी

- 14 जयशंकर प्रसाद : सालवती
32 सुभाष शर्मा : वजूद
38 तरसेम गुजराल : पुराना आदमी
43 हरिओम : ये धुआँ धुआँ अँधेरा
50 अर्चना पैन्थूली : फैनी
56 राजेन्द्र कुमार कनौजिया : सपने

कविता

- 70 पंकज राग : 1857 के डेढ़ सौवें वर्ष में
73 स्वप्निल श्रीवास्तव : बेरोजगारी के अद्भुत दिन, गाओ तो, आदमी के दुख
74 प्रतापराव कदम : अब्दुल्ला सर का इहलोक परलोक

कहानी जो याद आती है

- 21 विजयमोहन सिंह : सालवती—ऐतिहासिक से अधिक सामाजिक तथा समकालीन

इंटरनेट

- 24 गिरिराज अग्रवाल : हिन्दी को नया जीवन

डायरी

26 जीवनसिंह ठाकुर : पीठासीन की डायरी

यात्रा : पोर्ट ब्लेयर

29 मीरा सीकरी : दर्द की पृष्ठभूमि में

आलेख

62 शम्भुनाथ : प्रगतिशील आन्दोलन और आधुनिकता

इस माह की पुस्तक

75 श्रीभगवान सिंह : एक युगधर्मी आलोचक की खोज

77 बसन्त त्रिपाठी : साधारण जीवन की असाधारणता

पहली परम्परा की खोज

79 भगवान सिंह : अप्रदुग्धा सर्वदुग्धा

सिनेमा, नया सिनेमा

82 कुणाल सिंह : टर्टल्स कैन फ्लाई—कछुए उड़ सकते हैं !

पढ़ते-लिखते

86 सुशील सिद्धार्थ : कहीं धूप है कहीं चाँदनी

सम्पूर्ण उपन्यास

92 राजेन्द्र लहरिया : जगदीपजी की उत्तरकथा

प्रत्यंचा

120 ज्ञान चतुर्वेदी : तारा जब टूटता है



आवरण चित्र : कोरोड के.एच. (साभार : आकृति आर्ट गैलरी, कोलकाता)

रेखांकन : कर्मेन्द्र विक्रम सिंह

आरम्भिक पृष्ठों के रेखांकन : वाज्जदा खान

आवरण संयोजन और साज-सज्जा : ज्ञानपीठ कला प्रभाग

जब तक हमने नहीं किया था प्यार
किया था क्या
ताज्जुब है
—जॉन डन

नया

ज्ञानोदय

प्रेम महाविशेषांक

विभूतिनारायण राय का सम्पूर्ण उपन्यास
प्रेम की भूतकथा

धर्मवीर भारती का एक क्लासिक प्रेम पत्र
और

हिन्दी की पाँच अमर प्रेम कहानियाँ
अन्य भारतीय भाषाओं की पाँच प्रेम कहानियाँ
विश्व साहित्य से पाँच प्रेम कथाओं का संचयन

सम्भावित कहानीकार

दूधनाथ सिंह, प्रियंवद, धीरेन्द्र अस्थाना, देवेन्द्र,
शमोएल अहमद, परितोष चक्रवर्ती, मधु कांकरिया,
पंकज मित्र, ए.एसफल, रॉबिन शॉ पुष्प, दीपक शर्मा,
चन्द्रमोहन प्रधान, राजेन्द्र राव, कृष्ण बिहारी, राजेन्द्र
लहरिया, सुशील सिद्धार्थ, रवि बुले, कुणाल सिंह, महुआ
माजी, चन्दन पांडेय, मनोजकुमार पांडेय, राकेश मिश्र,
मनीषा कुलश्रेष्ठ, वन्दना राग, अनुज, रजनी गुप्त, पंकज
सुबीर, गौरव सोलंकी, राहुल सिंह, ओमप्रकाश तिवारी
आदि

व

चुनी हुई प्रेम कविताएँ

तथा

नवनीता देवसेन, कान्तिकुमार जैन, विनोद शाही, प्रांजल धर, सूर्यकान्त नागर, केवल गोस्वामी,
सत्यनारायण आदि की पठनीय, रोचक व संग्रहणीय सामग्री

अगला ही अंक

मूल्य 50 रु.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करायें

भाषा और राजनीति का क्या सम्बन्ध हो सकता है, इस पर कभी चर्चा नहीं हुई है। अगर संसद और विधानमंडल में प्रयुक्त होने वाली भाषा का विश्लेषण किया जाए तो यह कहने में ज़रा भी अतिशयोक्ति न होगी कि हमारे विधायकों और सांसदों की भाषा उत्तरोत्तर अशालीन होती चली गयी। नेहरू युगीन संसद में कटु से कटु बात अत्यन्त शालीन भाषा में कही जाती थी। डॉ. लोहिया नेहरू जी के परम विरोधी थे, मगर उनकी भाषा पर गौर करें तो लगता था जैसे कोई व्यक्ति बौद्धिक विमर्श कर रहा है। कृष्ण मेनन, पटेल, अम्बेडकर, अटल बिहारी वाजपेयी, इन्दिरा गाँधी, मनमोहन सिंह की

पिछली संसद में माननीय सांसदों के आचरण और भाषा को देखकर लोकसभा के अध्यक्ष इतना क्षुब्ध हो गये थे कि उन्हें सदन में ही श्राप देना पड़ा था, 'आपका आचरण निन्दनीय है। आप लोकतन्त्र का काम तमाम कर रहे हैं और देश की जनता सबकुछ देख रही है। मैं उम्मीद करता हूँ कि लोग आपको पहचान लें और सबक सिखायें। मेरे विचार में सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी जानी चाहिए।'

भाषा का संस्कार देखिए और दूसरी तरफ आज के अन्य अनेक नेताओं की भाषा। पिछली संसद में माननीय सांसदों के आचरण और भाषा को देखकर लोकसभा के अध्यक्ष इतना क्षुब्ध हो गये थे कि उन्हें सदन में ही श्राप देना पड़ा था, 'आपका आचरण निन्दनीय है। आप लोकतन्त्र का काम तमाम कर रहे हैं और देश की जनता सबकुछ देख रही है। मैं उम्मीद करता हूँ कि लोग आपको पहचान लें और सबक सिखायें। मेरे विचार में सदन की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी जानी चाहिए।' मतदाताओं ने इस बार सोमनाथ दादा की

बात की तार्किकता को देखकर कि वे उसके साथ हैं, जिसका आचरण निन्दनीय नहीं है, जिसका भाषा पर नियन्त्रण है। दरअसल भारत का चरित्र अब तेज़ी से बदल रहा है। शिक्षा का प्रचार-प्रसार इतना बढ़ चुका है कि आज मतदाता उस भाषा को नकारने लगे हैं, कल तक जिसे सुनकर तालियाँ पीटा करते थे। एक समय ऐसा भी था कि 'इनको मारो जूते चार' जैसी गाली गलौज भरी भाषा का दौरा था, जिससे मतदाता को अब वितृष्णा हो चुकी है। अब तो साक्षरता का इतना व्यापक प्रसार हो चुका है कि गुड़िया, बुढ़िया, अयोग्य, कमज़ोर, रीढ़हीन जैसे विशेषण मतदाता को अटपटे लगने लगे हैं। शायद

यही कारण है कि इस चुनाव में ज्यादातर उसी उम्मीदवार की जीत हुई जिसने अपनी जुबान पर लगाम रखी, गाली गलौज़ से परहेज़ रखा और अपने शालीन व्यवहार का परिचय दिया। दक्षिण की एक चर्चित अभिनेत्री को उत्तर प्रदेश में उनके प्रतिद्वन्द्वियों की फूहड़ भाषा ने ही जिता दिया। दिग्गज बाहुबलियों को भी उनकी भाषा ने ही उन्हें संसद से बाहर का दरवाज़ा दिखा दिया। इस बात पर भी गौर करना ज़रूरी लग रहा है कि इस चुनाव में युवा पीढ़ी के उभरते हुए नेताओं की भाषा अपने समय के अनेक धाकड़ नेताओं की भाषा से कहीं अधिक शालीन और धारदार थी। मतदाताओं ने उन दलों को भी धूल चटा दी जिनके कम्पेन की भाषा संयत नहीं थी। दो चचेरे भाइयों की भाषा की तुलना देश भर में हो रही है। एक भाई ने अशालीन भाषा में साम्प्रदायिक उन्माद भड़का कर खुद तो अपनी सीट बचा ली लेकिन अपने दल की अनेक सीटें गँवाने में उल्लेखनीय भूमिका निभायी। दूसरे भाई को जो अभूतपूर्व सफलता हासिल हुई उसमें उसकी भाषा और सोच के अवदान को नकारा नहीं जा सकता। आज़ादी के बासठ साल बाद शिष्ट भाषा के प्रयोग की यह छोटी सी ख्वाहिश हमारे देश के मतदाताओं ने प्रकट की है। अगले चुनावों में उनकी अपेक्षाएँ और बढ़ेंगी। भाषा में जिस गति से परिवर्तन आ रहा है और नए-नए शब्द ईज़ाद हो रहे हैं उन पर गौर करना भी दिलचस्प होगा। एक ताज़ा-ताज़ा शब्द राजनीति के गलियारों में उछल कूद मचा रहा है जो कि मलाईदार मन्त्रालयों का पर्याय है यानी कि 'एटीएम मन्त्रालय'। इसी प्रकार लल्लुओं के स्थान पर 'पप्पू' शब्द का प्रचलन बढ़ा है। देखने में आया है कि मतदान प्रतिशत में पप्पू के कारण कई जगह इज़ाफ़ा हुआ है।

इस माह हमने वरिष्ठ कथा-लेखिका चन्द्रकिरण सौनरेक्सा को खो दिया। भारतीय ज्ञानपीठ परिवार की तरफ़ से हार्दिक श्रद्धांजलि देते हुए भारत भारद्वाज ने उन पर एक आत्मीय स्मरण लिखा है। इस अंक का विशेष आकर्षण है धर्मवीर भारती की अब तक एक अप्रकाशित कहानी, जिसे पुष्पाजी के सौजन्य से हम यहाँ छाप रहे हैं। निदा फ़ाज़ली, एहतेराम इस्लाम और विज्ञान व्रत की गज़लें तथा पंकज राग, स्वप्निल श्रीवास्तव और प्रतापराव कदम की कविताएँ सम्मिलित की जा रही हैं। विजयमोहन सिंह ने अपने स्तम्भ 'कहानी जो याद आती है' के अन्तर्गत इस बार जयशंकर प्रसाद की अब तक अचर्चित रही आयी कहानी 'सालवती' को लिया है। कहानियों में जयशंकर प्रसाद की उक्त कहानी के अलावा सुभाष शर्मा, तरसेम गुजराल, हरिओम, अर्चना पैन्थली और राजेन्द्र कुमार कनौजिया की कहानियाँ दी जा रही हैं। गिरिराज अग्रवाल (इंटरनेट पर हिन्दी), जीवन सिंह ठाकुर (डायरी), मीरा सीकरी (यात्रा) के आलेख इस अंक की अन्य उपलब्धियाँ हैं। डॉ. शम्भुनाथ ने प्रगतिशील आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में एक गहन चिन्तन-परक आलेख लिखा है। विजय बहादुर सिंह की आलोचना पुस्तक पर श्रीभगवान सिंह व गोविन्द मिश्र के उपन्यास पर बसन्त त्रिपाठी की समीक्षाएँ दी जा रही हैं। राजेन्द्र लहरिया के सम्पूर्ण उपन्यास 'जगदीपजी की उत्तरकथा' के अलावा भगवान सिंह, कुणाल सिंह, सुशील सिद्धार्थ और ज्ञान चतुर्वेदी के नियमित स्तम्भ अंक में सम्मिलित हैं।

